सफलता की कहानी... कृषक महिलाओं की जुबानी

1 कृषि विज्ञान केन्द्र – चित्तौड़गढ़

प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन ने दी नई विकास की दिशा

कृषक का विवरण

नाम	:	श्रीमती सलमा बानो
पति	:	श्री अहमद हुसैन
आयु	:	46 वर्ष
शिक्षा	:	8 वीं पास
पता	:	गाँव– बस्सी, तह. बस्सी, चित्तौड़गढ़
फोन नं.	:	9166633752
सफलता का क्षेत्र मूल्य	:	मसाला प्रसंस्करण
प्रेरणा का स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, चित्तौड़गढ़ (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती सलमा बानो महिलाओ के लिए एक शानदार प्रेरणा स्त्रोत है क्योकि यह एक हाथ से विकलांग है, और विकलांग होते हुए भी न सिर्फ अपनी पहचान बनाई है बल्कि कई महिलाओ को स्वरोजगार उपलब्ध कराकर उन्हे आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है। श्रीमती सलमा बानो सामान्य परिवार से सम्बन्ध रखती है तथा शारीरिक विकलांगता के चलते इन्होने अपने जीवन में काफी संघर्ष किया है। इसी संघर्ष काल के दौरान श्रीमती सलमा बानो ने कौशल विकास हेतु विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्राप्त किये। उन्ही प्रशिक्षणो में एक प्रशिक्षण मसाला प्रसंस्करण ने सलमा बानो को काफी प्रभावित किया और यह कार्य उन्हे अपनी परिस्थिति के अनुकूल भी लगा जिसके चलते उन्होने मसाला प्रसंस्करण को ही अपना रोजगार बना लिया।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, चित्तौड़गढ़ द्वारा प्रशिक्षण व तकनीकी सहयोग के साथ ही श्रीमती सलामा बानो ने एक स्वयं सहायता समूह का गठन किया जिसका नाम समावेश सांई कृपा स्वयं सहायता समूह रखा गया।

सफलता का विवरण

श्रीमती सलमा बानो द्वारा गठित स्वयं सहायता समूह में वर्तमान समय में पांच महिला सदस्य है जिनका मासिक वेतन 6000/– रू. प्रतिमाह है। यह स्वयं सहायता समूह कोरोनो वर्ष से पूर्व ज्यादा सदस्यो युक्त तथा सफलता पूर्वक चलायमान था किन्तु कोरोनाकाल के पश्चात इस स्वयं सहायता समूह में भी गिरावट दर्ज की गई। किन्तु श्रीमती सलमा बानो ने हार न मानते हुए पांच सदस्यो से ही इस समूह को जारी रखा तथा मसाला प्रसंस्करण के अलावा अन्य कार्य जैसे कपड़े के बैग बनाना, अचारए पापड़ बड़ी, आदि बनाने जैसे कार्यो को भी साथ जोड़ा ताकि स्वयं सहायता समूह द्वारा आय अर्जित होती रहे।

सफलता का असर – सलमा बानो का यह स्वयं सहायता समूह धीरे धीरे अपनी पहचान बढ़ा रहा है। यह विभिन्न मेलो में समूह द्वारा तैयार विभिन्न प्रसंस्करित उत्पाद तथा सम्बन्धित उत्पाद की प्रदर्शनी भी लगाते है तथा यह नाबार्ड एवं कट्स जैसी संस्थाओ से जुड़कर लगातार कार्य करते हुए आगे बढ़ रहे है। बस्सी क्षैत्र में चलने वाला यह स्वयं सहायता समूह विभिन्न तैयार उत्पादो की बिक्री से सालाना 5.00 लाख तक की शुद्ध आय अर्जित कर रहा है, साथ ही क्षैत्र में अपनी पहचान बना चुका है।

क्षेत्र में योगदान

इस स्वयं सहायता समूह द्वारा तैयार प्रसंस्करित मसाले जैसे हल्दी, मिर्च, धनिया, गरम मसाला एवं अन्य खाद्य मसाले, अचार, पापड़ तथा व्यर्थ कपड़ो के बैग इत्यादि आपपास के क्षैत्रो में व्यावसायिक तथा घरेलू स्तर न सिर्फ पसन्द किये जाते है बल्कि थोक में खरीदे भी जाते है। प्रसिद्धि के इस स्तर पर श्रीमती सलमा बानो द्वारा संचालित यह स्वयं सहायता समूह निःसन्देह सराहनीय है।

संकलनकर्ता
डॉ. आर.एल. सोलंकी एवं दीपा इन्दौरिया
कृषि विज्ञान केन्द्र, चित्तौड़गढ़ (राज)

सफलता की कहानी... कृषक महिलाओं की जुबानी

2 कृषि विज्ञान केन्द्र – चित्तौड़गढ़

सिलाई से विकास की मिली नई दिशा

कृषक का विवरण

नाम	:	श्रीमती कमला देवी
पति	:	श्री गोविन्द लाल मेघवाल
आयु	:	42 वर्ष
शिक्षा	:	10 वीं पास
पता	:	गाँव– केवलपुरा, तह. बड़ीसादड़ी, चित्तौड़गढ़
फोन नं.	:	9784148118
सफलता का क्षेत्र मूल्य	:	लहंगा, सूट एवं ब्लाउज
प्रेरणा का स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, चित्तौड़गढ़ (राज.)

पृष्ठभूमि

ग्रामीण महिला भी हर एक क्षेत्र में पुरुषों से कन्धे से कन्धा मिलाकर घर परिवार को आर्थिक सम्बल प्रदान कर रही हैं। चित्तौड़गढ़ जिले जनजाति क्षैत्र के छोटे से गांव केवलपुरा की श्रीमती कमला देवी ने अपने आपको सशक्त महिला के रूप में साबित किया है। परिवार में कमला देवी के पति एक सामान्य कृषक है जो कृषि द्वारा आय अर्जित करते है तथा कमला देवी सिलाई के अलावा पति के खेती कार्य में सहयोग कर परिवार के आर्थिक स्तर को बढ़ाने में सहायोग कर रही है।

तकनीकी हस्तक्षेप

श्रीमती कमला देवी वर्ष 2020 से कृषि विज्ञान केन्द्र, चित्तौड़गढ़ द्वारा प्रशिक्षणो में भाग लेती रही है तथा वर्ष 2022 में इन्होने कृषि विज्ञान केन्द्र के तकनीकी सहयोग से अपनी स्वयं की एक सिलाई केन्द्र की शुरूवात की और वर्तमान समय तक यह करीब 100 महिलाओ को सामान्य सिलाई कला सिखा चुकी है तथा स्वयं भी सिलाई करके आय अर्जित कर रही है।

सफलता का विवरण

श्रीमती कमला देवी के कारण केवलपुरा जनजाति क्षेत्र के आसपास के गांव में सिलाई कला में पारगंत महिलाओ की संख्या बढ़ी है इसी अनुपात में महिला सशक्तिकरण के अन्तर्गत महिलायें आर्थिक रूप से भी सशक्त हुयी है। जिन्होने आय अर्जन नही भी की है तो उनमें सिलाई के रूप में कौशल विकास की शुरूवात हुई है। जिसकी वजह से वह अपने स्वयं एवं परिवार के कपड़े सिल सकती है जिससे आर्थिक बचत में बढ़ोतरी हो रही है।

सफलता का असर – श्रीमती कमला देवी साधारण दिनो में वस्त्रो की सिलाई द्वारा 600/–रू. प्रतिदिन आय अर्जित कर लेती है तथा विवाह इत्यादि जैसे विशेष अवसरो पर प्रतिदिन 1200/–रू. की आय अर्जित हो जाती है। चूंकि कमला देवी अपने क्षेत्र में महिला टेलर के रूप के रूप में अच्छी पहचान बना चुकी है। अतः इन्हे आसपास के गांवो से भी सिलाई हेतु वस्त्र भेजे जाते है। इस तरह यह सालाना 150000/–रू. शुद्ध आय प्राप्त कर लेती है जिसमें सिलाई सीखने वाली महिलाओ का शुल्क भी शामिल है।

क्षेत्र में योगदान

श्रीमती कमला देवी जनजाति क्षैत्र कस्तुरबा बालिका छात्रावास, मरावदिया में तीन महिने तक सिलाई प्रशिक्षक के तौर पर कार्य किया जिस दौरान उन्होने उन बालिकाओ को सिलाई कला की बारिकिया सिखाई। जनजाति क्षेत्र के मरावदिया गावं में कृषि विज्ञान केन्द्र चित्तौड़गढ़ द्वारा आयोजित सिलाई एवं कटाई प्रशिक्षण में भी कमला देवी ने बतौर मुख्य प्रशिक्षक के रूप में कार्य किया। वर्तमान में श्रीमती कमला देवी बड़ीसादड़ी पंचायत समिति के जनजाति क्षैत्र में महिला टेलर के रूप में अपनी पहचान बना चुकी है।

संकलनकर्ता
डॉ. आर.एल. सोलंकी एवं दीपा इन्दौरिया
कृषि विज्ञान केन्द्र, चित्तौड़गढ़ (राज)